विशेषाधिकार विहीन वर्ग में शिल्पी लोग भी आते थे, उनकी संख्या लगभग 25 लाख थी। वे नगरों में रहते थे तथा श्रेणियों में संगठित थे। इनके अपने नियम और विशेषाधिकार थे लेकिन उसके कारण लोगों में आये दिन लड़ाई-झगड़ा होते रहते थे। फलत: औद्योगिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था और शिल्पियों के कारबार करने के अधिकार में बाधा पड़ती थी, फलत: वे लोग बहुत असंतुष्ट रहते थे।

फ्रांसीसी समाज में सर्वाधिक निकृष्ट स्थिति किसानों और मजदूरों की थी। फ्रांस में इनकी आबादी लगभग 2 करोड़ थी, इसमें से लगभग दस लाख अर्द्ध दास अर्थात् बंधुआ किसान तथा शेष स्वतंत्र थे। जिनके पास उनकी जमीन थी फिर भी उसकी दशा अच्छी नहीं थी। राज्य, सामन्तों और पदाधिकारियों के भोग-विलास हेतु इन्हीं को धन जुटाना होता था। और जहाँ कुलीन व पादरी सभी प्रकार के करों से मुक्त थे, वहाँ किसानों को राज्य को भूमिकर-चर्च को दशांस तथा कुलीनों को सामंतीकर जैसे तीन प्रकार के कर देना पड़ता था। अतएव इनकी दशा दयनीय थी और ये फ्रांस के समाज में परिवर्तन हेतु तत्पर रहते थे।

आर्थिक दशा :- फ्रांस के आर्थिक क्षेत्र में काफी अधिक दुर्व्यवस्था थी। फलत: आर्थिक स्थिति एकदम खराब हो गई थी और यह स्थिति इतनी खराब हो गई थी कि अन्तत: इसी को लेकर फ्रांस में क्रांति का श्रीगणेश हुआ।

लुई सोलहवाँ फ्रांस की राजधानी पेरिस को छोड़कर वर्साय में रहता था। वहाँ जिस महल में जीवन व्यतीत करता और आनन्द लुटता, वह ईसाई जगत में प्रत्येक राजा के लिए स्पर्द्धा की वस्तु थी। सैकड़ों गिरजाघर, नाट्यशाला, भोजनकक्ष, सत्कार गृह, अनगिनत अतिथि भवन, राज-प्रसाद और सैकड़ों नौकर-चाकर के रहने के कमरे थे, जिसमें कुल अठारह हजार व्यक्ति रहते थे। राजकीय अस्तबलों में 1900 घोड़े तथा 200 रथ थे जिस पर 400000 डालर वार्षिक खर्च होता था। राजा के भोजन में 15 लाख डॉलर व्यय होता था। चूँकि विलासिता और शौक का अन्त न था इसीलिए 1789 के कुछ महीने पहले तक अंधाधुन्ध अपव्ययता के फलस्वरूप 20009000 डॉलर व्यय हुआ, जिससे आर्थिक अव्यवस्था फैल गई।

लुई सोलहवाँ आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए तुर्गो, नेकर, कैलोन और अंत में लोमनै डी ब्रायन आदि योग्य अर्थ-मंत्रियों को बहाल किया। इन लोगों ने अपनी योग्यता के अनुसार ऋण तथा टैक्स लगाकर स्थिति में सुधार करना चाहा लेकिन वे लोग असफल रहे। अन्त में प्रमुखों की सभा ने सुझाव दिया कि नये करों की स्वीकृति के

लिए पार्लमा से अनुरोध किया जाय तो उस तरह के अनुमति पार्लमा ने अस्वीकार कर दिया और कहा कि नये करों की अनुमति देने का अधिकार इस्टेट्स जेनरल को है। 1 मई 1789 को इस्टेट्स जेनरल का अधिवेशन बुलाया गया और इस्टेट्स जेनरल की बैठक शुरू होते ही क्रांति का बिगुल बज उठा।

फ्रांस की कार्य प्रणाली अनुचित, घृणित व पक्षपात पूर्ण थी। फ्रांस के पादरी तथा कुलीन वर्ग, जिनके पास अथाह संपत्ति थी, वे करमुक्त थे और फ्रांस के निहत्थे गरीब किसान पर अनेक प्रकार के कर लगे थे। फ्रांस में कर वसूलने का तरीका भी अनियमित था। जिसमें किसान और भी शोषित और पीड़ित रहते थे। हर पाँच-छः वर्षों के बाद फ्रांस की सरकार परीक्षा कर वसूलने का ठेका देती थी। ये ठेकेदार निश्चित रकम देकर अधिक से अधिक रुपये रैयत से वसूलते थे। इस तरह से फ्रांस के किसान हर प्रकार से पीड़ित थे।

फ्रांस में आय-व्यय का कोई बजट तैयार नहीं किया जाता था, जिससे राज्य कर्मचारी बीच में ही रुपया उड़ा देते थे। उसका पता किसी को नहीं चलता था और राष्ट्र दिन प्रतिदिन ऋण के बोझ से दबते जा रही थी। स्थिति यह हो गई थी, ऋण तो दूर ब्याज देना कठिन हो गया था। फ्रांस का राजा इस दुर्व्यवस्थाओं के लिए उत्तरदायी माना जाता था।

इस समय तक फ्रांस में औद्योगिक क्रांति आरंभ हो चुकी थी। राज्यक्रांति के पहले मशीन का थोड़ा-बहुत प्रयोग प्रारंभ हो गया था। फलतः फ्रांस से आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया था। क्योंकि बहुत से शिल्पी व कारीगर बेकार हो गये और क्रांति की सामना करने लगे। जब क्रांति का आरंभ हुआ तो इन लोगों ने उनका हार्दिक स्वागत किया।

राजा और कुलीनों के तरफ से अनेक प्रकार के टैक्स लगाए गए थे। वे नगर सीमा शुल्क, सामन्ती सीमा शुल्क और प्रांतीय सीमा शुल्क थे। जिससे वस्तु के दाम तो दुगुना हो ही जाता था, विनिमय में भी काफी समय लगता था। इन सब दुर्व्यवस्थाओं से व्यापारी लोग काफी दुखी रहते थे और फ्रांस के समाज में एक क्रांति लाना चाहते थे। जिससे वे सब प्रतिबन्ध हट जाए और अनुकूल तथा उन्मुक्त व्यापार कर सकें।

राजनीतिक व्यवस्था :- राजतंत्र की निरंकुशता फ्रांसीसी क्रांति की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। ऐसे तो फ्रांसीसी राजतंत्र की निरंकुशता की परम्परा बहुत पुरानी थी, लेकिन लुई चौदहवाँ के शासन काल में इसका